विवाहेतर सम्बन्ध
(ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में)

- चन्द्र प्रकाश शर्मा

हमारी कक्षा के शोध का विषय है- विवाह हेतु 'कुंडली मिलान'। हालांकि इस विषय पर अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं और शास्त्रों में भी बहुत कुछ लिखा है, लेकिन हम सब विद्यार्थियों का उद्देश्य था देश-काल-पात्र के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपने शोध को आगे बढ़ाना। आज स्त्री घर से बाहर निकलकर हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज, देश और स्वयं अपने परिवार की उन्नति में सहयोग देने में सक्षम है। ऐसे में विवाह नामक संस्था के उत्तरदायित्त्वों, कर्त्तव्यों के निर्वहन तथा अधिकारों की परिभाषा बदलती जा रही है। प्राचीन शास्त्रों में दर्शाए गए सूत्रों और उक्तियों को पुनः परखने और नवीन सूत्रों की प्रतिपादित करने की आवश्यकता है।

कक्षा में विवाह सम्बन्धी बहुत से घटकों पर चर्चा हुई कि कौन से घटक हों, जैसे स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, मानसिक तालमेल, मनोवैज्ञानिक सामंजस्य आदि जिनसे वैवाहिक जीवन स्वर्ग से सुन्दर लगने लगे और विपरीत परिस्थितियों में जीवन नारकीय व्यतीत हो सकता है या विवाह असफल होकर सम्बंधविच्छेद तक की नौबत आ सकती है। कक्षा में विवाह में विलम्ब, उपयुक्त जीवनसाथी का न मिलना, प्रेम विवाह अर्थात् विवाह से पहले प्यार आदि पर चर्चा हुई। लेकिन मैंने जिस विषय को चुना वह है 'विवाह के बाद का प्रेम संबंध'। सुनने या पढ़ने में अजीब सा लग सकता है लेकिन विवाह की सफलता या असफलता में इस सूत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जब एक पक्ष अपने ही जीवनसाथी को धोखा देने लग जाए तो प्रतिपक्ष के जीवन में घुन लगना आरम्भ हो जाता है। टूटता तो दिल है मगर घायल आत्मा हो जाती है और जब बात बर्दाश्त से बाहर हो जाती है तो फिर विवाह टूटने में देर नहीं लगती।

जब इस विषय पर शास्त्रों में भी चारित्रिक पतन के कई सूत्र दिए हैं तो फिर क्यों नहीं विवाह हेतु, कुंडली परामर्श लेने वालों के लिए इस संदर्भ में विचार-विमर्श या मार्गनिर्देशन किया जाता है। दरअसल हम दोहरे जीवन और मापदंडों को ढोते-ढोते ऐसे विषयों से कतराते हैं लेकिन अब समय आ गया है कि यौन शिक्षा की अनिवार्यता के साथ ही ज्योतिष में भी ऐसे विषयों पर परिचर्चा की जा सके ताकि समाज का कुछ_भला हो।

आइये इस विषय को संक्षेप में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर परखें। मेरी एक ज्योतिष मित्र के अनुसार प्रकृति ने पुरुष को इस संदर्भ से कमजोर बनाया है और स्त्री को शक्तिशाली। जो कमजोर होता है वही जीवनसाथी को धोखा दे सकता है। कुछ योगी और मानसिक रूप से मजबूत पुरुषों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश पुरुष स्त्रियों की और शीघ्र आकर्षित होते नज़र आते हैं। आज के संदर्भ और परिवेश में जहां स्त्री और पुरुष घर के बाहर अन्य स्त्री-पुरुषों के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं और स्त्री के किंचित कमजोर पड़ते ही विवाहेत्तर सम्बन्ध बनने में देर नहीं लगती।

इस विषय में मेरी जिज्ञासा की शुरूआत भी एक बड़ी रोचक घटना से हुई। बात 2009 की है जब मैंने ज्योतिषाचार्य की उपाधि बस ली ही थी। मेरे पुत्र की बी०बी०ए० में प्रवेश की काउन्सलिंग चल रही थी। अन्य अभिभावकों के साथ मैं भी अपनी बारी की प्रतिक्षा कर रहा था। बातों-बातों में साथ में बैठे एक सज्जन से ज्योतिष की चर्चा शुरू हो गई। उन्हें अपनी कुंडली याद थी। एक योग देखकर हमने अपना उथला ज्योतिष ज्ञान बघारना शुरू कर दिया कि आपके घर में तो बड़ा क्लेश रहता है आपकी तो अपनी पत्नी से हमेशा अनबन रहती होगी। वह सज्जन बहुत प्रभावित हुए और पास खिसक आए। मैंने आगे बताना शुरू किया कि आपके घर में स्त्री को लेकर झगड़ा है जिस पर आप आसक्त हैं और उससे विवाहेत्तर सम्बन्ध भी है। अब तो वह सज्जन एकदम सकपका गए और मैंने भी तीर निशाने पर लगते देख या यूं भी कहते हैं कि ऐसे में अगर सरस्वती देवी जिह्वा पर आकर बैठ जाए तो सारे ज्योतिषिय नियम एक तरफ रखे रह जाते हैं मैंने आगे कहा कि आपका ये सम्बन्ध ऐसा है कि आप इसे छोड़ भी नहीं सकते क्योंकि उस स्त्री के प्रति भी आप अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। अब तो उन्होंने समर्पण कर दिया और सिलसिलेवार अपनी पूरी कहानी बताई आज तीन वर्ष बाद भी उन

पति-पत्नी दोनों के फोन मेरे पास आते रहते हैं। उनकी पत्नी ने अपनी पति को छोड़ देने की धमकी भी दी लेकिन उनपर कोई असर नहीं हुआ। वह योग और कुछ नहीं था, नवम भाव में मंगल-शुक्र की युति थी।

लेकिन उस घटना ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया कि कुछ तो है ज्योतिष में जो इस विषय पर प्रकाश डाल सकता है। कुंडली मिलान के समय यदि इस घटक का भी विवेचन है तो विवाहेत्तर सम्बन्ध की संभावना वाली कुंडली से प्रतिपक्ष को सचेत किया जा सकता है और एक होने वाले विवाह को टूटने से बचाया जा सकता है। लेकिन यह तभी हो सकता है जब हमारे पास शत-प्रतिशत प्रमाणित सूत्र हों जिसके लिए सार्थक शोध की आवश्यकता है। यह विषय इतना जटिल है कि आपको आसानी से कुंडलियां ही नहीं मिलेंगी। लेकिन हम सब मिलकर प्रयास करें तो कुंडलियां एकत्र हो सकती हैं। हमारी रिश्तेदारियों और जानकारियों में ऐसे गुल खिलते रहते हैं, बस आपको उन कुंडलियों के आंकड़े एकत्र करने हैं।

मैं सभी पाठकगणों से अनुरोध करुंगा कि यदि इस विषय में कुछ आंकड़े उपलब्ध करा सकें तो 'ईमेल' (ercpsharma@yahoo.com or www.bvbasto.website) पर प्रेषित कर सकते हैं। गोपनीयता के लिए चाहें तो आगे दिये गये उदाहरणों की तरह संक्षेप में भाव, राशि और पाँच-छह ग्रहों का ही विवरण जन्मकुंडली और नवांश कुंडली के निमित्त दे सकते हैं।

यहाँ स्थान अभाव के कारण केवल दस कुंडलियों पर चर्चा की गयी है और सूत्र भी शास्त्रों से थोड़ा हटकर हैं। जैसे मंगल-शुक्र की युति/परिवर्तन और उन पर जन्मकुंडली तथा नवांश कुंडली के शुभाशुभ प्रभाव के अतिरिक्त सूर्य-चंद्र और उनके लग्नों पर भी प्रभाव का विश्लेषण किया गया है क्योंकि सूर्य आत्मा का कारक है और चन्द्रमा मन का। यदि मन अपवित्र होने लगे तो आत्मा भी निर्मलता छोड़ दूषित हो सकती है और तभी विवाहेत्तर संबंधों की संभावना भी बढ़ सकती है।

उदाहरण-1

जन्मांग में मंगल शुक्र दोनों नीच के हैं। शनि और मंगल दोनों का जन्म लग्न, सूर्य लग्न और चन्द्र लग्न तीनों पर प्रभाव है।

उदाहरण-1 (दशा-शनि/शुक्र)

जन्म कुंडली

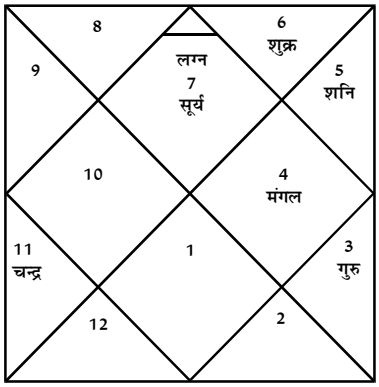

नवांश कुंडली

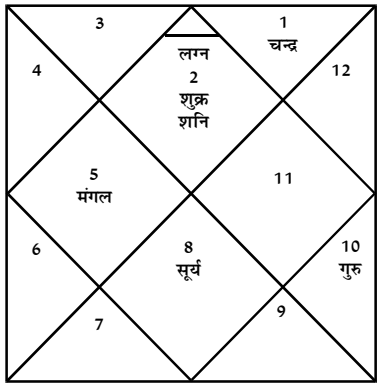

नवांश में लग्न और सप्तम भाव पर शुक्र, शनि और सूर्य का प्रभाव है। शनि का जन्म लग्न, सूर्य लग्न पर प्रभाव है और चन्द्रमा से द्वि-द्वादश है। मंगल का भी सूर्य लग्न पर प्रभाव है।

उदाहरण-2

जन्मांग में चतुर्थ में शुक्र का मंगल से दूषित होना तथा मंगल-शुक्र युति पर शनि का प्रभाव है। यहां शुक्र दो पाप ग्रहों के प्रभाव में है। सूर्य और

उदाहरण-2 (दशा-राहु/शुक्र)

जन्म कुंडली

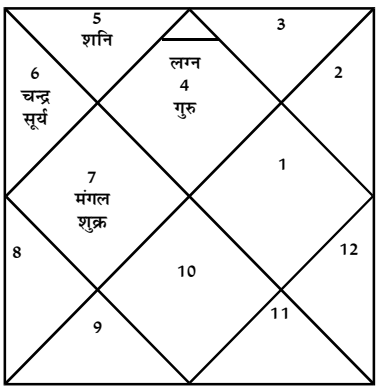

नवांश कुंडली

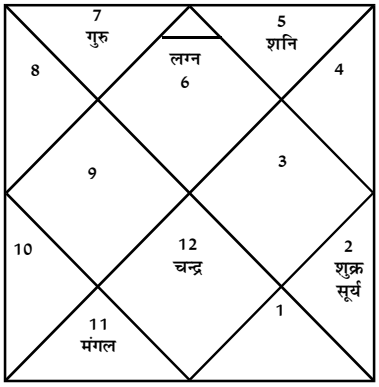

चन्द्र लग्न का पापकर्त्तरी में है।

नवांश में शुक्र तथा सूर्य लग्न पर मंगल तथा शनि दोनों का प्रभाव है।

उदाहरण-3

जन्मांग में सूर्य लग्न और शुक्र पर शनि का प्रभाव है। मंगल पर शनि द्वारा वक्रीयता से दृष्टिपात तथा नीच के शुक्र की मंगल से द्वि-द्वादश स्थिति है। लग्न तथा सप्तम अक्ष पर मंगल व शनि का प्रभाव है।

नवांश में जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न क्रमशः मंगल तथा शनि के प्रभाव में हैं। द्वादशस्थ शुक्र पर शनि का प्रभाव है और शुक्र मंगल से द्वि-द्वादश है।

उदाहरण-3 (दशा-बुध/गुरु)

जन्म कुंडली

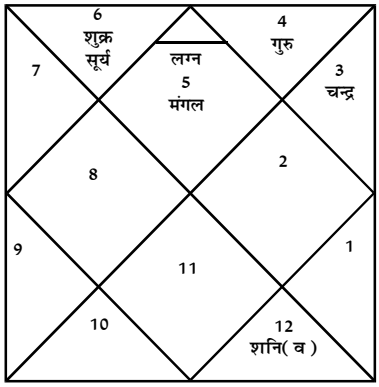

नवांश कुंडली

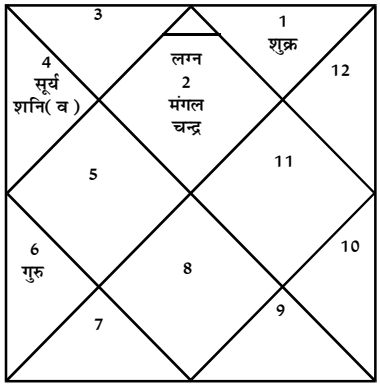

उदाहरण-4

जन्मांग में शुक्र-मंगल की युति है। यह युति शनि की वक्रता से प्रभावित

उदाहरण-4 (दशा-शुक्र/बुध)

जन्म कुंडली

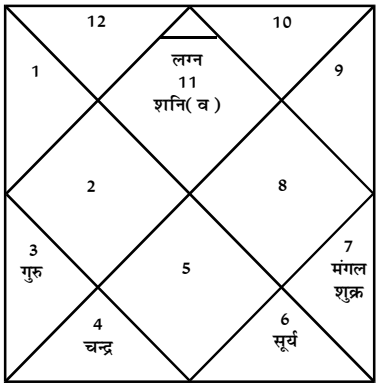

नवांश कुंडली

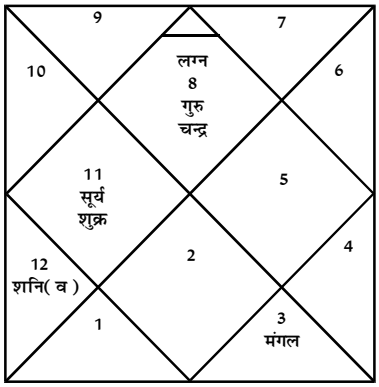

हो रही है। शनि का लग्न तथा वक्रता से चन्द्र लग्न पर भी प्रभाव है। चन्द्रमा का 6/12 से सम्बन्ध है।

नवांश में शनि का वक्रता से सूर्य लग्न तथा चन्द्र लग्न पर क्रमशः स्थिति और दृष्टि प्रभाव है। सूर्य शत्रु के साथ शत्रु राशि में स्थित है तथा चन्द्र नीच का है।

उदाहरण-5

जन्मांग में मंगल और शुक्र का क्रमशः अष्टम और छठे भाव से संबंध

उदाहरण-5 (दशा-राहु/राहु)

जन्म कुंडली

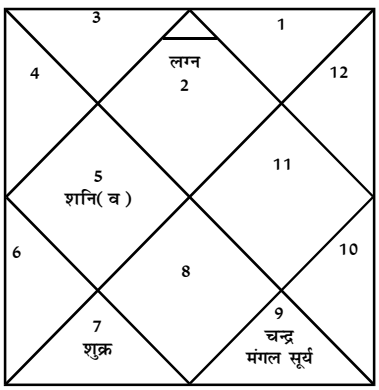

नवांश कुंडली

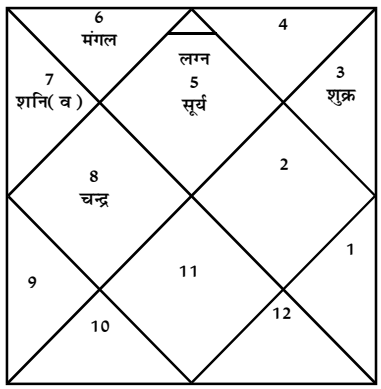

बना हुआ है। शुक्र और जन्म लग्न पर शनि की दृष्टि है। चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न पर मंगल का प्रभाव है तथा अष्टम से भी संबंध है।

नवांश में शुक्र पर शनि का वक्रता से प्रभाव है। चन्द्रमा नीच का है।

उदाहरण-6

जन्मांग में शुक्र की मंगल से द्वि-द्वार्दश स्थिति है। शुक्र पर शनि की दृष्टि है। शनि की उच्च के चन्द्रमा से युति है परन्तु यह युति छठे भाव में है तथा वक्रता से सूर्य का भी देख रहा है।

नवांश में छठे भाव में स्थित मंगल-शुक्र युति पर वक्रता से शनि का प्रभाव है। शनि का सूर्य पर तथा मंगल का चन्द्र पर प्रभाव है।

उदाहरण-6 (दशा-शनि/शनि)

जन्म कुंडली

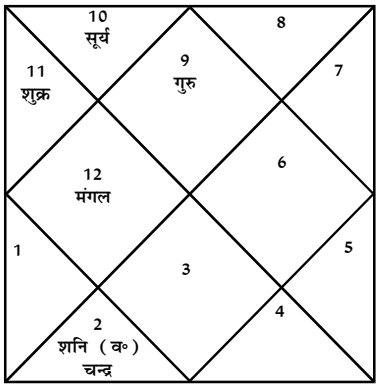

नवांश कुंडली

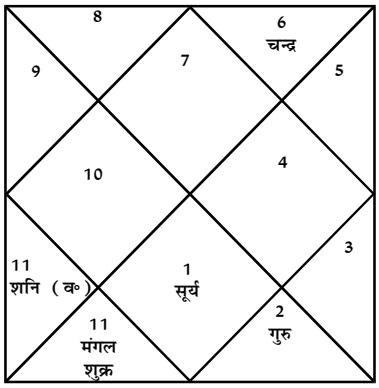

उदाहरण-7

जन्मांग में मंगल-शुक्र की द्वि-द्वार्दश स्थिति है। चन्द्रमा पर मंगल का प्रभाव है।

नवांश में मंगल-शुक्र युति पर शनि की दृष्टि है। शनि का चन्द्र लग्न और

उदाहरण-7 (दशा-बुध/शुक्र)

जन्म कुंडली

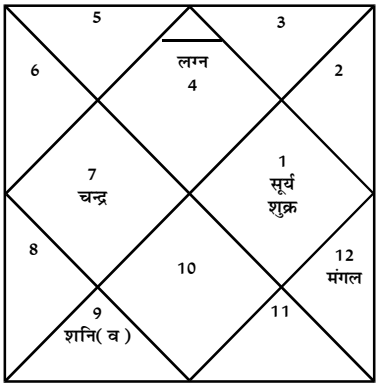

नवांश कुंडली

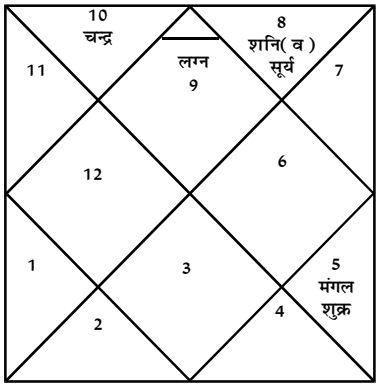

सूर्य लग्न पर भी प्रभाव है। सूर्य का द्वादश भाव से सम्बन्ध है।

उदाहरण-8

जन्मांग में शुक्र का राशीश मंगल है। मंगल और सूर्य क्रमशः अष्टम और छठे भाव में स्थित हैं। शनि का चद्रमा पर तथा वक्रता से सूर्य पर दृष्टि है। जन्म लग्न में स्वयं शनि विराजमान हैं।

उदाहरण-8 (दशा-शनि/राहु)

जन्म कुंडली

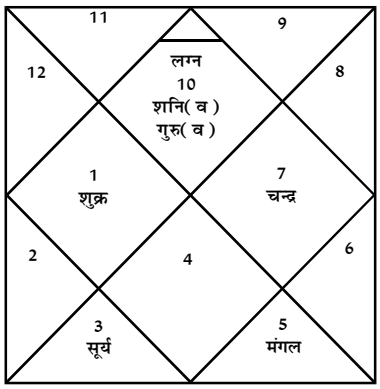

नवांश कुंडली

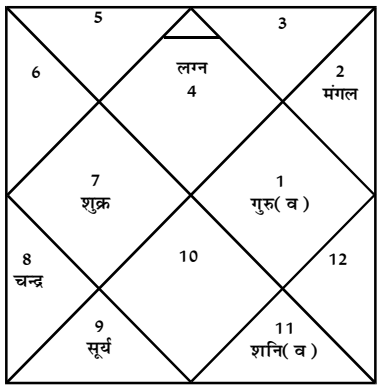

नवांश में मंगल का राशीश शुक्र है। सूर्य एवं चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि है। चन्द्रमा पर शनि का भी प्रभाव है।

उदाहरण-9

जन्मांग में मंगल शुक्र में तो कोई सम्बन्ध नहीं है। सूर्य और चन्द्रमा पर शनि का तथा मंगल की वक्रता का दृष्टि प्रभाव है।

उदाहरण-9

जन्म कुंडली

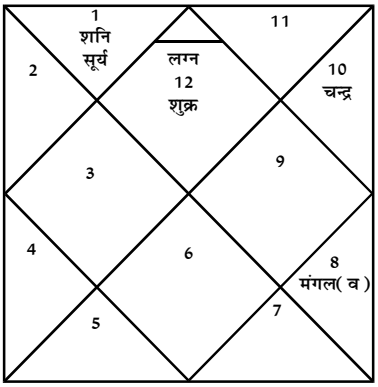

नवांश कुंडली

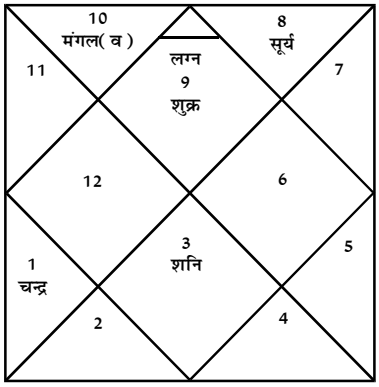

नवांश में मंगल शुक्र द्वि-द्वादश स्थिति में हैं तथा मंगल की वक्रता से शुक्र पर प्रभाव है। शुक्र पर शनि का भी प्रभाव है। चन्द्र पर मंगल की दृष्टि है।

उदाहरण-10

जन्मांग में मंगल(व) का राशीश शुक्र नीच का है। चन्द्र नीच का होकर मंगल और शनि से पीड़ित है।

नवांश में सूर्य एवं चन्द्र, मंगल तथा शनि से पीड़ित है।

उदाहरण-10

जन्म कुंडली

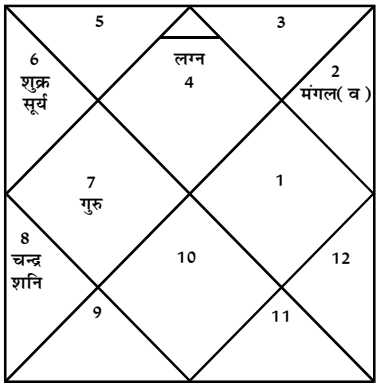

नवांश कुंडली

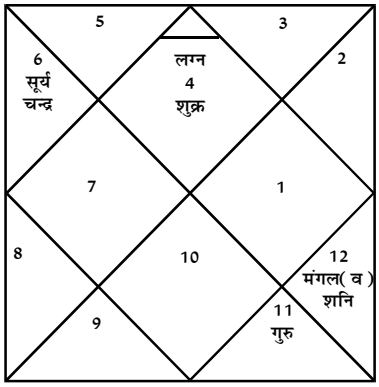

उपरोक्त विवरण से हम देखते हैं कि अक्सर लोग मंगल-शुक्र युति/ परिवर्तन से चौंक उठते हैं जबकि यह घटक 20 में से केवल 4 में पाया गया। इस मंगल-शुक्र युति को केवल रोमांस के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। यदि इस युति पर पाप प्रभाव है तो ध्यान दिया जा सकता है। मंगल-शुक्र की द्वि-द्वादश स्थिति भी इस दिशा में कोई प्रकाश नहीं डालती। शनि का वक्री होना 60 प्रतिशत मामलों में पाया गया है, यह विचारणीय है। जन्म लग्न पर शुभाशुभ प्रभाव विवाहेत्तर सम्बन्धों पर कोई खास संकेत नहीं देते हैं।

कृपया संलग्न तालिका देखें ---

ग्रह	मंगल-शुक्र युति/परिवर्तन		मंगल-शुक्र युति/परिवर्तन पर प्रभाव				मंगल-शुक्र द्वि द्वादश स्थिति		शनि का वक्र होना	जन्म लग्न पर प्रभाव			
			शुभ		अशुभ					शुभ		अशुभ	
वर्ग	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9		D-1	D-9	D-1	D-9
कुण्डली नं॰-1	✗	✗					✗	✗	✗	✓	✓	✓	✓
2	✓	✗	✗		✓				✗	✓	✗	✗	✓
3	✗	परिवर्तन		✓			✓	✓	✓	✗	✓	✓	✓
4	✓	✗	✓		✓				✓	✓	✓	✓	✓
5	✗	✗							✓	✗	✗	✓	✗
6	✗	✓		✗		✓	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✓
7	✗	✓		✗		✓	✓		✓	✓	✓	✗	✓
8	✗	✗					✗	✗	✓	✓	✓	✓	✓
9	✗	✗					✗	✗	✗	✓	✓	✗	✓
10	✗	✗					✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗
योग	2	2	1		2	2	2	1	6	7	7	6	8
कुल योग	4		2		4		3		6	14		14	

मंगल पर प्रभाव

प्रभाव/स्थिति	शुभ		अशुभ		नीचत्व		शत्रुत्व राशि में स्थिति		6,8,12 से सम्बन्ध		पापकर्त्तरी	
वर्ग	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9
कुण्डली नं०-1	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
2	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✓	✗	✗
3	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
4	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✓	✓	✗
5	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✓
6	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✓
7	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗
8	✓	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗
9	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗
10	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
योग	4	3	5	5	1			4	2	2	1	2
कुल योग	7		10		1		4		4		3	

शुक्र पर प्रभाव

प्रभाव/स्थिति	शुभ		अशुभ		नीचत्व		शत्रुत्व राशि		6,8,12 से सम्बन्ध		पापकर्त्तरी	
वर्ग	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9
कुण्डली नं॰-1	✗	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✓	✗
2	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
3	✗	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗
4	✓	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗
5	✓	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗
6	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✓
7	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗
8	✓	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
9	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓
10	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗
योग	5	2	5	9	3			2	2	1	4	2
कुल योग	7		14		3		2		3		6	

सूर्य लग्न पर प्रभाव (आत्मा)

प्रभाव/स्थिति	शुभ		अशुभ		नीचत्व		शत्रुत्व राशि		6 ,8 ,12 से सम्बन्ध		पापकर्त्तरी	
वर्ग	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9
कुण्डली नं॰-1	✓	✓	✓	✓	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗
2	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✓	✗
3	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗
4	✓	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✗
5	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗
6	✗	✗	✓	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗
7	✓	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗
8	✓	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	✗
9	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗
10	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
योग	6	4	7	8	1		2	2	3	3	2	
कुल योग	10		15		1		4		6		2	

चन्द्र लग्न पर प्रभाव (मन)

प्रभाव/स्थिति	शुभ		अशुभ		नीचत्व		शत्रुत्व राशि		6 ,8 ,12 से सम्बन्ध		पापकर्त्तरी	
वर्ग	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9	D-1	D-9
कुण्डली नं॰-1	✓	✗	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✓	✗	✗
2	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗
3	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗
4	✗	✓	✓	✓	✗	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗
5	✓	✓	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✓
6	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✓	✗	✓	✓	✗	✗
7	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗
8	✗	✓	✓	✓	✗	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗
9	✓	✓	✓	✓	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗
10	✗	✗	✓	✓	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
योग	3	7	9	7	1	3	5	2	3	2	1	1
कुल योग	10		16		4		7		5		2	

ग्रह	शुभ	अशुभ	नीचत्व	शत्रुत्व राशि में संस्थित	6,8,12 से सम्बन्ध	पापकर्त्तरी
मंगल	7/20	10/20	1/20	4/20	4/20	3/20
शुक्र	7/20	14/20	3/20	2/20	3/20	6/20
सूर्य	10/20	15/20	1/20	4/20	6/20	2/20
चन्द्र	10/20	16/20	4/20	7/20	5/20	2/20

ग्रहों पर प्रभाव

ग्रह	शुभ	अशुभ	नीचत्व	शत्रुत्व राशि में संस्थित	6,8,12 से सम्बन्ध	पापकर्त्तरी
मंगल	7/20	10/20	1/20	4/20	4/20	3/20
शुक्र	7/20	14/20	3/20	2/20	3/20	6/20
सूर्य	10/20	15/20	1/20	4/20	6/20	2/20
चन्द्र	10/20	16/20	4/20	7/20	5/20	2/20

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रत्येक कुण्डली में मंगल, शुक्र, सूर्य (आत्मा), चन्द्र (मन) चारों पर पाप प्रभाव अधिक है और शुभ प्रभाव कम है जो इस शोध के लिए विचारणीय संकेत/बिन्दु हैं। नीचत्व, शत्रुत्व, त्रिक भावों, पापकर्त्तरी आदि पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह मात्र ग्रह के बल को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष यही है कि कुंडली मिलान करते समय विवाहेत्तर सम्बन्ध की संभावना की ओर ध्यान देने की आवश्यकता तो है परन्तु मंगल-शुक्र और उनकी युति पर बुरा प्रभाव या आत्मा और मन के कारक क्रमशः सूर्य और चन्द्र पर अत्यधिक अशुभ प्रभाव हो तभी इसका विस्तृत विश्लेषण शास्त्रसम्मत सूत्रों के अनुसार वर्तमान परिवेश में जो कि इसी पुस्तक में अन्यत्र दिये गए हैं, उनपर विचार करने की आवश्यकता है अथवा नहीं। उल्लेखनीय है कि यह लेख एक आमन्त्रण है इस विषय की अनिवार्यता महसूस करने की और अधिकाधिक आंकड़े उपलब्ध करवाने की। मैं पाठकवृन्द से अनुरोध करूंगा कि यदि वे अन्य सूत्र भी समेकित करना चाहते हैं तो उनका स्वागत है। वे ई-मेल, वैबसाईट या फेसबुक के माध्यम से या माई टी०वी० चैनल के द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। हमारे परम गुरू का निर्देश है कि जब तक पर्याप्त मात्रा में आंकड़े उपलब्ध न हों तब तक किसी शोध को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। मैंने तो एक टेबू विषय को खंगालने का और विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिसमें आप सबका साथ अपेक्षित है।

*****